प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011
विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) समष्टि अर्थशास्त्र एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र एक दूसरे के –

(i) पूरक (ii) विरोधी

(iii) प्रतिद्वंदी (iv) कोई नहीं।

(ब) समय के आधार पर बाजार को वर्गीकृत किया गया है –

(i) दो (ii) तीन

(iii) चार (iv) पांच

(स) कौन सी सेवा को राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है –

(i) कृषि से आय (ii) वेतन से आय

(iii) उद्योग से आय (iv) विधवा पेंशन

(द) कौन सी बैंक नोट निर्गमन का कार्य करती है –

(i) व्यापारिक बैंक (ii) रिजर्व बैंक

(iii) सहकारी बैंक (iv) उपर्युक्त सभी

(इ) अन्तरकोटि रीति किसकी देन है –

(i) कार्ल पियर्सन (ii) स्पियर मैन

(iii) बाउले (iv) फिशर

Choose the correct answer in the following.

(a) Macro and Micro Economics are to each other -

(i) Complementary (ii) Opposite

(iii) Competitive (iv) None of these.

(b) Classified market according to time factor -

(i) Two (ii) Three

(iii) Four (iv) Five

(c) Which term is not added in National Income -

(i) Agricultural Income (ii) Salary

(iii) Industrial Income (iv) Vidhawa Pensions

(d) Give the name of Bank which issued money -

(i) Commercial Bank (ii) Reserve Bank

(iii) Cooperative Bank (iv) above al Banks

(e) Who find Rank difference method -

(i) Karlpearson (ii) Spear Man

(iii) Bowley (iv) Fisher

प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) कार तथा पेट्रोल.....वस्तुएं है।

(ii) बाजार मूल्य.....मूल्य है।

(iii) भारत में राष्ट्रीय आय की गणना.....से अगले वर्ष 31 मार्च तक की जाती है।

(iv) अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत का प्रतिपादन.....ने किया।

(v) कीन्स का रोजगार सिद्धांत.....कालीन है।

Fill in the blanks.

(i) Car and Petrol commodities are.....

(ii) Market price is.....price.

(iii) Calculation of National Income in India from.....to next year 31st March on ward.

(iv) .....was the propounded of the theory of maximum social advantage.

(v) The employment theory of Keynes is.....according to time.

प्रश्न 3. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ी बनाइये –

खंड अ	–	**खंड ब**
(अ) प्राथमिक क्षेत्र	–	संकटकालीन
(ब) प्रादिष्ट मुद्रा	–	आयकर
(स) प्रत्यक्षकर	–	पशुपालन
(द) निर्देशांक	–	माध्य विचलन
(इ) श्रेणी के सभी मूल्यों पर आधारित	–	आर्थिक बैरोमीटर
	–	अप्रत्यक्ष कर

— बिक्री कर

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

A		-	B
(a)		-	In Emergency
(b)	Token paper money	-	Income Tax
(c)	Direct Tax	-	Animal husbandry
(d)	Index number	-	Mean deviation
(e)	Depend on all values of	-	Economical Barometer
		-	Indirect Tax
		-	Sales Tax

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. सभी राष्ट्रों से व्यापार किस अर्थव्यवस्था में होता है?
2. भारतीय रूपया मुद्रा है।
3. भुगतान संतुलन में सम्मिलित मदें?
4. भारत सरकार का बजट किस माह में प्रस्तुत होता है?
5. दो चरों में परिवर्तन एक ही दिशा में होने पर सहसम्बंध होगा?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. Trade between countries called?
2. Indian coin (Rupia) is called?
3. Give the item in the Balance of payment.
4. In which month Indian Government put its budget?
5. Which co-relation has the variation of varibles in same directions?

प्रश्न 5. सत्य / असत्य बताइये —

1. रिजर्व बैंक की स्थापना 1 अप्रैल 1935 को हुई।
2. केन्द्र सरकार के व्यय में सबसे बड़ी मद ब्याज व्यय है।
3. भुगतान शेष अनुकूल होना अच्छा है।
4. बजट प्रधानमंत्री पेश करता है।

5. प्रमाप विचलन एक निरपेक्ष माप है।

Write True or False.

1. Reserve Bank of India establish on 1st April 1935.
2.
3. Favorable balance of payment is good.
4. Prime Minister put the budget.
5. Standard deviation is absolute measurement.

प्रश्न 6. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अन्तर लिखिए?

Differences between Micro and macro Economics?

अथवा

Or

''व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक है'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

Clarify the statement "Micro Economic and Macro Economics are supplementary each other".

प्रश्न 7. गिफिन के विरोधाभास से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

Clarify, What do you understand about Giffin contractions.

अथवा

Or

वस्तु की मांग को प्रभावित करने वाले कोई चार तत्व बताइये।

State any four elements to affecting supply?

प्रश्न 8. पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में कोई चार अंतर स्पष्ट कीजिए।

Clarify, difference between perfect competition and imperfect competition.

अथवा

Or

बाजार मूल्य एवं सामान्य मूल्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Clarify, difference between Market Price and Normal Price?

प्रश्न 9. अभावी या न्यून मांग को ठीक करने के कोई चार उपायों का वर्णन कीजिए।

Give the measures to correct deficit demand? any four.

अथवा

Or

गुणक के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

Explain the multiplier theory of Keynesian.

प्रश्न 10. व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Clarify, differences between Trade Balance and Payment Balance.

अथवा

Or

स्थिर बनाम लोचपूर्ण विनियम दर के पक्ष में कोई चार तर्क लिखिए।

Give any four point infavour of fixed is floating rate of exchange.

प्रश्न 11. सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त में समानताओं का वर्णन कीजिए।

Describe similarity between public finance and private finance.

अथवा

Or

राजस्व का आधुनिक समय में महत्व लिखिए। (कोई चार बिन्दु)

Write any four importance of Public Finance in Modern time?

प्रश्न 12. ''जीवन निर्वाह व्यय निर्देशांक'' या उपभोक्ता मूल्य निर्देशांक'' के निर्माण के प्रमुख उद्देश्य एवं उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

Describe the main aim and utility of cost of living Index Number or consumer price index number.

अथवा

Or

निर्देशांक की रचना करते समय कौन–कौन सी सावधानियां रखनी चाहिए?

Write the precautions to constructing of index numbers.

प्रश्न 13. अपकिरण के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डालिये?

Write the aims and importance of dispersions.

अथवा

Or

माध्य विचलन की प्रमुख विशेषताएं बताइये?

Write the main characteristics of mean deviation.

प्रश्न 14. मांग की लोच को प्रभावित करने वाले कोई पांच तत्वों की व्याख्या कीजिए?

Explain any five elements which affecting the elasticity of demand.

अथवा

Or

मांग के नियम की सचित्र उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

Explain the law of demand with diagram.

प्रश्न 15. सकल घरेलू उत्पाद एवं सकल राष्ट्रीय उत्पाद में अंतर स्पष्ट कीजिए?

Clarify the difference between Gross Domestic Product and gross National Product.

अथवा

Or

राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली का महत्व स्पष्ट कीजिए?

Clarify the importance of National Income Accounts System.

प्रश्न 16. प्रो. कीन्स के आय एवं रोजगार सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

Explain in details the income and employment theory of Keynes.

अथवा

Or

आय एवं रोजगार के परम्परावादी सिद्धांत एवं कीन्स के सिद्धांत की तुलना कीजिए?

Write the similarity and dissimilarity of classical and Keynesian theory of income and employment.

प्रश्न 17. किसी देश की अर्थव्यवस्था में बजट के मुख्य उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

Describe the main objects of budget in reference of Economic of any country.

अथवा

Or

बजट का अर्थ बताते हुए बजट की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Write the meaning of budget and describe the characteristics of budget.

प्रश्न 18. सह संबंध के अध्ययन का महत्व स्पष्ट कीजिए?

Explain the importance of studies of co-rrelation.

अथवा

Or

निम्न आंकड़ों से कार्ल पियर्सन का सह संबंध गुणांक ज्ञात ज्ञात कीजिए।

X	12	9	8	10	11	13	7
Y	14	8	6	9	11	12	3

Find the coefficient of co-relation of the following data's by Karlpearsons' method.

X	12	9	8	10	11	13	7
Y	14	8	6	9	11	12	3

प्रश्न 19. वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले कोई छः तत्वों की व्याख्या कीजिए।

Explain any six factors to influencing the supply.

अथवा

Or

पूर्ति की लोच के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

Describe the types of elasticity of supply.

प्रश्न 20. धातु मुद्रा एवं पत्र मुद्रा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Write difference between metalic money and paper money.

अथवा

Or

कागजी मुद्रा (पत्र मुद्रा) के प्रमुख दोषों का वर्णन कीजिए। (कोई छः)

Write the main demerits of paper money. (Any six)

प्रश्न 21. निर्देशांकों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Describe main characteristics of Index Numbers.

अथवा

निम्नलिखित आंकड़ों से फिशर का आदर्श निर्देशांक ज्ञात कीजिए।

वर्ष	चांवल		गेहूं		ज्वार	
	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा
1985	4	50	3	10	2	5
1986	10	40	8	8	4	4

Calculte the fisher's Ideal index number with the help of the data siven below.

Year	Rice		Wheat		Jawar	
	Price	Qty.	Price	Qty.	Price	Qty.
1985	4	50	3	10	2	5
1986	10	40	8	8	4	4

– – – – – –

आदर्श उत्तर

विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर :–

उत्तर 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) पूरक।

(ब) चार।

(स) विधवा पेंशन।

(द) रिजर्व बैंक।

(इ) स्पियर मैन।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(i) पूरक।

(ii) वास्तविक मूल्य।

(iii) 1 अप्रैल।

(iv) डाल्टन।

(v) अल्पकालीन।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सही जोडियां –

	खंड अ	–	**खंड ब**
(अ)	प्राथमिक क्षेत्र	–	पशुपालन
(ब)	प्रादिष्ट मुद्रा	–	संकटकालीन
(स)	प्रत्यक्षकर	–	आयकर

(द) निर्देशांक – आर्थिक बैरोमीटर

(इ) श्रेणी के सभी मूल्यों पर आधारित – माध्य विचलन

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. सभी राष्ट्रों से व्यापार खुली अर्थव्यवस्था में होता है।
2. प्रामाणिक सांकेतिक मुद्रा भारतीय रूपया मुद्रा है।
3. भुगतान संतुलन में सम्मिलित मदें दृश्य व अदृश्य मदें है।
4. भारत सरकार का बजट फरवरी माह में प्रस्तुत होता है।
5. दो चरों में परिवर्तन एक ही दिशा में होने पर धनात्मक सह संबंध होगा।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सत्य/असत्य बताइए –

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 6. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में 4 अंतर

क्र.	अंतर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1.	विषय सामग्री	व्यष्टि अर्थशास्त्र में वैयक्तिक आर्थिक इकाईयों का अध्ययन	समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यस्था का अध्ययन किया जाता है।

		किया जाता हैं	
2.	तेजी और मंदी	व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत फर्म, उद्योग या व्यापारिक ईकाई में तेजी व मंदी की विवेचना की जाती है।	समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण आर्थिक मंदी तथा आर्थिक तेजी का स्पष्टीकरण किया जाता है।
3.	सीमा	व्यष्टि का क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण आदि पर आधारित नियमों तक सीमित है।	समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र राष्ट्रीय आय, पूर्ण रोजगार एवं राजस्व आदि संपूर्ण अर्थ व्यवस्था से संबंधित समस्याओं का विश्लेषण करता है।
4.	विश्लेषण	व्यष्टि अर्थशास्त्र कीमत विश्लेषण से संबंध रखता है	समष्टि अर्थशास्त्र का लक्ष्य आय का विश्लेषण करना है।

(प्रत्येक सही अन्तर पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

''व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक है''

व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की दो शाखाएं है, हालांकि व्यष्टि एवं समष्टि आर्थिक विश्लेषण के क्षेत्र पृथक है किन्तु कुछ आर्थिक समस्याएं ऐसी है जिनके विश्लेषण के लिए व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र दोनों की आवश्यकता होती है इन दोनों में से कोई भी एक प्रणाली अपने आप में पूर्ण नहीं है। प्रत्येक प्रणाली के अपने–अपने दोष व सीमाएं है। एक प्रणाली की सीमाएं तथा दोष दूसरी प्रणाली द्वारा दूर कर लिये जाते हैं इसलिए व्यष्टि एवं

समष्टि अर्थशास्त्र को एक–दूसरे का प्रतियोगी न कहकर पूरक कहा जाता है। निम्न दो बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है :–

1. **समष्टि आर्थिक विश्लेषण में व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता :–** संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करने के लिए हमें व्यक्तिगत इकाइयों का विश्लेषण करना पड़ता है। संपूर्ण अर्थव्यवस्था की सामान्य प्रवृत्ति की सही–सही जानकारी तभी प्राप्त हो सकती है जब हमें तथ्यों व सिद्धांतों का ज्ञान हो जो लोगों, परिवारों एवं धर्मों के व्यवहार को प्रभावित करते हों इस प्रकार समष्टि आर्थिक विश्लेषण का कार्य व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण के अभाव में अपूर्ण रह जाता है।
2. **व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण में समष्टि आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता :–** व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण के लिए समष्टि आर्थिक विश्लेषण भी अति आवश्यक है जैसे किसी भी फर्म को अपने उत्पादन की मात्रा निश्चित करते समय समाज की संपूर्ण मांग, समाज की क्रय शक्ति, रोजगार के स्तर एवं आय के स्तर जैसी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है जो कि समष्टि विश्लेषण से ही संभव है।

अतः स्पष्ट है कि ''व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक है।''

(सही बिन्दु लिखे जाने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 7. मांग के नियम के कुछ अपवाद भी हैं उन्हीं में से एक अपवाद है गिफिन वस्तुएं। गिफिन वस्तुएं वे वस्तुएं होती है जिन पर मांग का नियम लागू नहीं होता है।

गिफिन का विरोधाभास :– गिफिन वस्तुओं के संबंध में मांग की कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता इनकी मांग घटा देता है अथवा कम कर देता है और इससे जो धन बच जाता है उससे वह श्रेष्ठ वस्तुएं क्रय कर लेता है। भले ही उनकी कीमतों में वृद्धि क्यों न हो। जैसे– ज्वार, बाजरा, गेहूं की तुलना में घटिया

किस्म की वस्तु हैं चूंकि बाजार में गेहूं की तुलना में घटिया है इसलिए निर्धन लोग अपनी आय का अधिक भाग ज्वार बाजरा पर खर्च करते हैं और अपनी आवश्यकता को संतुष्ट करते हैं। ऐसी घटिया किस्म की वस्तुओं की कीमतों में जब बहुत अधिक कमी होती है तो गरीब लोगों की वास्तविक आय अर्थात् उनकी क्रय शक्ति बढ़ जाती है और व अपनी बढ़ी हुई आय से श्रेष्ठ किस्म की वस्तुएं खरीदते हैं। इस प्रकार घटिया किस्म की वस्तुओं के मूल्यों में कमी होने पर भी उनकी मांग में वृद्धि न होकर कमी हो जाती है और मांग वक्र नीचे से ऊपर की ओर बढ़ने लगता है और मांग का नियम लागू नहीं होता इसे गिफिन का विरोधाभास कहा जाता है।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक

अथवा

वस्तु की मांग को प्रभावित करने वाले तत्व–

1. **वस्तु की कीमतः**– कीमत अधिक होने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है। कीमत कम होने पर वस्तु की मांग अधिक हो जाती है।
2. **उपभोक्ताओं की आयः–** उपभोक्ता की आय अधिक होने से मांग अधिक हो जाती है। उपभोक्ता की आय कम होने से वस्तुओं की मांग कम होती है।
3. **धन का वितरणः–** धन के असमान वितरण पर विलासिता वस्तुओं की मांग बढ़ेगी व समान वितरण पर आरामदायक वस्तुओं की मांग बढ़ेगी।
4. **जनसंख्याः–** जनसंख्या में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग बढ़ जायेगी।
5. **उपभोक्ताओं की रूचि** :– जिस वस्तु के प्रति उपभोक्ता की रूचि बढ़ जाती है तो उस वस्तु की मांग भी बढ़ जाती है। इसके विपरीत उपभोक्ता की रूचि जिस वस्तु के प्रति कम होती है उस वस्तु की मांग कम होती है।

उपरोक्तानुसार बिन्दु लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. पूर्ण प्रतियोगिता तथा अपूर्ण प्रतियोगिता में अन्तर –

क्र.	पूर्ण प्रतियोगिता	अपूर्ण प्रतियोगिता
1	इसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।	इसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है।
2	इसमें एक समान वस्तु का उत्पादन किया जाता है।	इसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
3	इसमें फर्मे मूल्य निर्धारक न होकर मूल्य स्वीकार करने वाली होती हैं।	इसमें फर्मे मूल्य को निर्धारित करती है।
4	यह बाजार की काल्पनिक स्थिति है।	यह बाजार की व्यावहारिक स्थिति है।

(प्रत्येक सही अंतर लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

अथवा

बाजार मूल्य एवं सामान्य मूल्य में अन्तर :–

	बाजार मूल्य	**सामान्य मूल्य**
1.	बाजार मूल्य अति अल्पकालीन मूल्य होता है।	सामान्य मूल्य दीर्घकालीन मूल्य होता है।
2.	मांग व पूर्ति के अस्थाई साम्य द्वारा निर्धारित होता है।	मांग व पूर्ति के स्थायी साम्य द्वारा निर्धारित होता है।
3.	बाजार मूल्य परिवर्तनशील होता है।	यह स्थायी होता है।
4.	मूल्य निर्धारण में मांग तत्व अधिक सक्रिय होता है।	पूर्ति पक्ष अधिक प्रभावशाली होता है।

(प्रत्येक सही अंतर लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 9. जब अर्थव्यवस्था में अभावी मांग की स्थिति उत्पन्न हो जाए, तो इसे ठीक करने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं –

(1) अधिक मुद्रा निर्गमन – केन्द्रीय बैंक को अधिकाधिक मात्रा में मुद्रा का निर्गमन करना चाहिए, ताकि सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि हो।

(2) बैंक दर में कमी – बैंक दर में कमी करने पर ब्याज दर में भी कमी आएगी, लोगों को सस्ते ऋण प्राप्त होंगे, जिससे बैंकों का साख–निर्माण अधिक होने लगेगा और देश में कुल मुद्रा पूर्ति की मात्रा बढ़ेगी।

(3) खुले बाजार में प्रतिभूतियों को खरीदना – इससे व्यापारिक बैंकों के नकद–कोषों में वृद्धि होगी और उनकी साख निर्माण क्षमता बढ़ जाएगी।

(4) रिजर्व अनुपात में कमी – रिजर्व अनुपात में कमी कर देने से साख गुणक बढ़ जावेगा और बैंक पहले की तुलना में अधिक साख निर्माण कर सकेंगे।

(5) उपभोक्ता साख को प्रोत्साहन – इसके लिए केन्द्रीय बैंक उपभोक्ता ऋणों के भुगतान की किस्तों की राशि को घटाकर, भुगतान की अवधि बढ़ा सकती है।

(6) सीमांत कटौती दर में कमी – इससे व्यापारिक बैक, व्यापारियों को उनके स्टॉक के बदले अधिक ऋण दे सकेंगे और अधिक साख का निर्माण हो सकेगा।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

गुणक का सिद्धांत :– कीन्स के रोजगार सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण अंग गुणक है लेकिन कीन्स का गुणक 'विनियोग गुणक' है। गुणक विनियोग की प्रारंभिक वृद्धि तथा आय की कुल अन्तिम वृद्धि के बीच आनुपातिक संबंध को बताता है। कीन्स का विचार है कि जब किसी देश की अर्थव्यवस्था में विनियोग की मात्रा में वृद्धि की जाती है तो उस देश की आय केवल विनियोग की मात्रा के बराबर

ही नहीं बढ़ती है, बल्कि इससे कई गुना अधिक बढ़ती है। विनियोग की मात्रा की तुलना में जितने गुना वृद्धि होती है उसे ही कीन्स ने गुणक कहा है।

सूत्र के रूप में –

$$\text{गुणक} = \frac{\text{आय में परविर्तन}}{\text{विनियोग में परिवर्तन}} \quad \text{या} \quad K \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

उदाहरणार्थः– यदि विनियोग में 1000 करोड़ रू. की वृद्धि करने से आय में 5000 करोड़ रू. की वृद्धि होती है तो गुणक होगा –

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} = \frac{5000}{1000} = 5$$

गुणक का मान 5 होगा।

(उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक)

उत्तर 10. **भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन में अंतर –**

	व्यापार संतुलन	**भुगतान संतुलन**
1	व्यापार संतुलन में आयात निर्यात की जाने वाली दृश्य मदों को ही शामिल किया जाता है।	भुगतान संतुलन में दृश्य मदों के साथ–साथ अदृश्य मदों को भी शामिल किया जाता है।
2	व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक भाग है।	भुगतान संतुलन की धारणा अधिक व्यापक होती है।
3	किसी देश का व्यापार संतुलन पक्ष में न होना कोई अधिक चिन्ता का विषय नही है।	यदि भुगतान संतुलन प्रतिकूल है तो यह चिन्ता का विषय है।
4	व्यापार संतुलन अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है।	भुगतान संतुलन सदा ही संतुलित रहता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

स्थिर बनाम् लोचपूर्ण विनियम दर के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जाते है :–

1. **भुगतान संतुलन में साम्यः–** लोचपूर्ण विनियम दर की दशा में अन्य राष्ट्रीय हितों जैसे– राष्ट्रीय आय, मूल्य स्तर आदि की उपेक्षा किये बिना भुगतान संतुलन में साम्य स्थापित करना संभव होता है।
2. **स्वतंत्र आर्थिक नीति** :– विनियम दर लोचपूर्ण होने पर कोई भी देश अपनी घरेलू आर्थिक नीतियां स्वतंत्रतापूर्वक बना सकता है।
3. **मौद्रिक नीति का स्वतंत्रता पूर्वक क्रियान्वयन** :– लोचपूर्ण विनिमय दर की स्थिति में मौद्रिक नीति को स्वतंत्रतापूर्वक तथा प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित किया जा सकता है। मौद्रिक नीति में परिवर्तन करके विनियम दर को इस प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है कि जिससे कीमतों में स्थिरता आये, रोजगार बढ़े तथा देश का आर्थिक विकास हो।
4. **अधिमूल्यन व अवमूल्यन** :– लोचपूर्ण विनिमय दर होने पर अपने देश की मुद्रा को विदेशी मुद्रा की तुलना में आसानी से बढ़ाया या घटाया जा सकता है। इससे अर्थव्यवस्था में साम्य बनाये रखना संभव होता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 11. सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त में निम्नलिखित समानताऐं होती है :–

1. **आवश्यकताओं की संतुष्टि** :– सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त दोनों का सामान्य उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि करना होता है निजी वित्त का संबंध व्यक्तिगत आवश्यकताओं की तथा सार्वजनिक वित्त का संबंध सामूहिक आवश्यकताओं की संतुष्टि से होता है।
2. **अधिकतम संतुष्टि का प्रयास** :– सार्वजनिक वित्त एवं निजी वित्त दोनों का उद्देश्य अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है। निजी वित्त में जहां एक विवेकशील व्यक्ति अपनी संतुष्टि को अधिकतम करना चाहता है वहीं

सार्वजनिक वित्त में एक विकासशील सरकार अपनी आय व्यय के समायोजन द्वारा सामाजिक लाभ को अधिकतम करना चाहती है।

3. **चुनाव की समस्या** :– निजी वित्त एवं सार्वजनिक वित्त दोनों का ही उद्देश्य चूंकि संतुष्टि को अधिकतम करने का होता है, इसलिए दोनों में ही प्राप्त विभिन्न विकल्पों में चुनाव की समस्या का सामना करना पड़ता है।
4. **ऋण की प्राप्ति** :– निजी वित्त एवं सार्वजनिक वित्त दोनों में ही चालू आय की तुलना में आय कम हो जाती है तो ऋण लेना आवश्यक हो जाता है। यही नहीं व्यक्ति की भांति राज्य को भी लिये गये ऋणों की वापसी करना पड़ती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

राजस्व का आधुनिक समय में महत्व निम्नलिखित है :–

1. **रोजगार में वृद्धि** :– राजस्व की क्रियाओं से देश में रोजगार में भी वृद्धि की जा सकती है यदि सरकारी कर प्रणाली ऐसी है जिससे ऐसे उद्योग प्रोत्साहित होते है जो रोजगार प्रधान है तो रोजगार में वृद्धि की जा सकती है।
2. **राष्ट्रीय आय में वृद्धि** :– राजस्व की नीतियों के द्वारा राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती है यदि कर प्रणाली ऐसी है कि बचत एवं विनियोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है तो इससे उत्पादन और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
3. **आर्थिक नियोजन में महत्व** :– आर्थिक नियोजन सरकार द्वारा प्रारंभ की जाने वाली एक सतत् प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत दीर्घकाल में देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती है। अतः आर्थिक नियोजन में राजस्व की क्रियाओ का बहुत महत्व होता है।

4. **सामाजिक न्याय की स्थापना :–** राजस्व की क्रियाओं से देश में आय व संपत्ति के वितरण में समानता लाई जा सकती है क्योंकि इन क्रियाओं से क्रयशक्ति का हस्तांतरण एक वर्ग से दूसरे वर्ग में होता है सरकार धनी वर्ग से प्राप्त आय को निर्धन वर्ग के कल्याण पर खर्च करती है इससे समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना की जा सकती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 12. जीवन निर्वाह या उपभोक्ता मूल्य निर्देशांक के निर्माण का मुख्य उद्देश्य एक निश्चित समय में उपभोक्ताओं के वर्ग विशेष के निर्वाह व्यय में होने वाले परिवर्तन की दिशा और मात्रा को ज्ञात करना होता है। समाज के विभिन्न वर्ग के लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते है। एक ही वर्ग के लोगों की उपयोग की आदते भी भिन्न–भिन्न होती है। अतः यह निर्देशांक विभिन्न स्थानों पर रहने वाले विभिन्न उपभोक्ता वर्गों के जीवन निर्वाह व्यय में हुए परिवर्तन के प्रभावों को स्पष्ट करता है।

उपयोगिता :–

1. इसकी सहायता से वर्ग विशेष के लोगों के रहन सहन के व्यय में होने वाले परिवर्तन की दिशा एवं मात्रा का अनुमान लगाया जाता है।
2. श्रमिकों एवं नौकरी पेशा वर्ग के लोगों के वेतन एवं महंगाई भत्ते का निर्धारण उनके जीवन निर्वाह व्यय निर्देशांक के आधार पर किया जाता है।

(उद्देश्य पर 2 अंक, उपयोगिता पर 2 अंक, कुल 4 अंक)

अथवा

निर्देशांक की रचना करते समय निम्नलिखित सावधानियां रखनी चाहिए :–

1. **उद्देश्य :–** प्रत्येक निर्देशांक सीमित और विशेष उद्देश्य के लिये बनाया जाता है। अतः निर्देशांक बनाते समय उनके उद्देश्य को निर्धारित करना आवश्यक होता है।

2. **आधार वर्ष का चुनाव :–** आधार वर्ष का अर्थ उस वर्ष से होता है जिसके आधार पर चालू वर्ष के मूल्यों की तुलना की जाती है। आधार वर्ष का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वह प्रत्येक दृष्टि से एक सामान्य वर्ष होना चाहिए।
3. **वस्तुओं का चुनाव :–** वस्तुओं का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उसमें सभी महत्वपूर्ण और आवश्यक वस्तुएं शामिल की जाए।
4. **प्रतिनिधि कीमतों का चुनाव :–** निर्देशांक की रचना करते समय प्रतिनिधि कीमतों का चुनाव आवश्यक होता है क्योंकि परिवर्तन की मात्रा इन्हीं के आधार पर मापी जाती है।

(प्रत्येक सही लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 13. **अपकिरण के उद्देश्य :–**

1. **माध्य से औसत दूरी ज्ञात करना :–** अपकिरण का पहला उद्देश्य माध्य से विभिन्न पद मूल्यों की औसत दूरी ज्ञात करना है।
2. **तुलनात्मक अध्ययन :–** अपकिरण के द्वारा दो या अधिक श्रेणियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

महत्व :–

1. **एकरूपता ज्ञात करना :–** अपकिरण से समूह में एकरूपता का अध्ययन किया जाता है।
2. **विचरणशीलता को नियंत्रित करना :–** अपकिरण के द्वारा विचरण की प्रकृति और कारणों की जानकारी प्राप्त की जाती है ताकि उनको नियंत्रित किया जा सकें।

(उद्देश्य पर 2 अंक, महत्व पर 2 अंक, कुल 4 अंक)

अथवा

माध्य विचलन की प्रमुख विशेषताएं :–

1. माध्य विचलन पद माला के सभी मूल्यों के आधार पर निकाले जाते है।
2. माध्य विचलन समांतर माध्य माध्यिका व बहुलक किसी की भी सहायता से निकाले जाते है।
3. इसमें बीज गणितीय चिन्हों जैसे (+) अथवा (–) का प्रयोग नहीं किया जाता है।
4. इसकी गणना करते समय वास्तविक माध्य का प्रयोग किया जाता है न कि कल्पित माध्य का।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 14. मांग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व –

1. **वस्तु की प्रकृति** – अनिवार्य वस्तुओं की मांग बेलोचदार एवं विलासिता वस्तुओं की मांग लोचदार होती है।
2. **स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धता** – स्थानापन्न वस्तुओं की मांग लोचदार होती है।
3. **वस्तु के अनेक प्रयोग–** बिजली जैसे अनेक प्रयोग वाली वस्तुओं की मांग की लोच, लोचदार होती है।
4. **संयुक्त मांग–** ऐसी वस्तुओं की मांग बेलोचदार हेाती है।
5. **उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति :–** उपभोक्ता की आर्थिक स्थिति का मांग की लोच पर बहुत प्रभाव पड़ता है। धनी वर्ग के लिए वस्तु की मांग बेलोचदार तथा निर्धन वर्ग के लिए वस्तु की मांग अधिक लोचदार होती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

मांग के नियम की सचित्र व्याख्या :–

मांग का नियम प्रो. मार्शल ने प्रतिपादित किया था उनके अनुसार ''यदि अन्य बाते समान रहे तो किसी वस्तु के मूल्य कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है और मूल्य बढ़ने पर मांग घट जाती है।

यह नियम वस्तु के मूल्य तथा मांग में विपरीत संबंध को बताता है। इसके अनुसार वस्तु की कीमत जैसे–जैसे बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उसकी मांग घटती जाती है तथा जैसे–जैसे वस्तु की कीमत घटती जाती है, वैसे–वैसे उसकी मांग बढ़ती जाती है।

मांग का नियम एक गुणात्मक कथन है अर्थात् यह वस्तु की कीमत और मांग में परिवर्तन की दिशा को बताता है न कि मात्रा को।

नियम की व्याख्या :– मांग के नियम को निम्न तालिका से समझाया जा सकता है:–

वस्तु का मूल्य	वस्तु की मांग (इकाईयों में)
1	500
2	400
3	300
4	200
5	100

तालिका से स्पष्ट है कि जैसे–जैसे वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है वैसे–वैसे उसकी मांग घटती जाती है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण :–

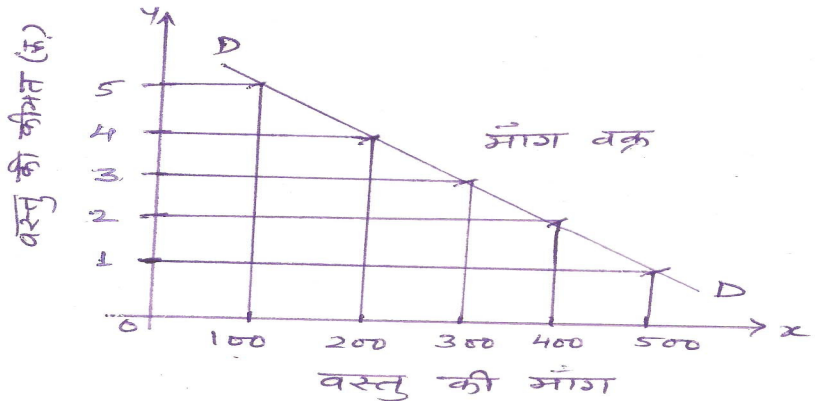

प्रस्तुत चित्र में OX अक्ष पर वस्तु की मांग तथा OY रेखा पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि जैसे–जैसे वस्तु की कीमत बढ़ती जा रही है उसकी मांग घटती जा रही है। चित्र में DD मांग वक्र है जो कीमत और मांग में विपरीत संबंध को दर्शा रहा है।

(वर्णन एवं व्याख्या पर 3 अंक, तालिका एवं चित्र पर 2 अंक, कुल 5 अंक)

उत्तर 15. सकल घरेलू उत्पाद एवं सकल राष्ट्रीय उत्पाद में अंतर :–

क्र.	**सकल घरेलू उत्पाद**	**सकल राष्ट्रीय उत्पाद**
1	एक देश की घरेलू सीमा में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एव सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों के योग को सकल घरेलू उत्पाद कहते है।	एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के मौद्रिक मूल्यों के योग को सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।
2	इसका संबंध एक देश की घरेलू सीमा से है।	इसका संबंध देश के सामान्य निवासियों से है।
3	यह एक भौगोलिक धारणा है।	यह एक राष्ट्रीय धारणा है।
4	इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय को जोड़ा नहीं जाता है।	इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय को जोड़ा जाता है।
5	यदि विदेशों से प्राप्त साधन आय ऋणात्मक है तो इसका मूल्य सकल राष्ट्रीय उत्पाद के मूल्य से अधिक होगा।	यदि विदेशों से प्राप्त साधन आय धनात्मक है तो इसका मूल्य सकल घरेलू उत्पाद के मूल्य से अधिक होगा।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली का महत्व :–

1. **आर्थिक नीति निर्माण में सहायक :–** इस प्रणाली के आधार पर सरकार विभिन्न आर्थिक नीतियों से संबंधित निर्णय लेती है, कुल राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग, कुल विनियोग जैसे महत्वपूर्ण तथ्यों का अनुमान लगाया जाता है।

2. **आर्थिक प्रगति की सूचक :–** राष्ट्रीय आय में वृद्धि को आर्थिक प्रगति का सूचक माना जाता है और राष्ट्रीय आय से संबंधित आंकड़ें राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली से ही प्राप्त होते हैं।

3. **आर्थिक विकास की माप** :– राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली से देश के आर्थिक विकास की माप की जाती है। इसमें उपभोग, विनियोग, सरकारी आय–व्यय और विदेशी व्यापार से संबंधित वर्गीकरण के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि आर्थिक विकास में कितना परिवर्तन हो रहा है।

4. **तुलनात्मक अध्ययन में सहायक :–** इसके द्वारा विभिन्न समयों में राष्ट्रीय आय की तुलना की जा सकती है।

5. **आर्थिक विश्लेषणों के लिए महत्वपूर्ण** :– यह अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए भी आवश्यक है। विभिन्न समूहों के बीच संबंध एकरूपता के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 16. कीन्स के आय और रोजगार के सिद्धांत को सामान्य सिद्धांत एवं प्रभावपूर्ण मांग का सिद्धांत भी कहा जाता है। उनके अनुसार एक अर्थव्यवस्था में आय और रोजगार का स्तर मुख्य रूप से प्रभावपूर्ण मांग के द्वारा निर्धारित होता है। प्रभावपूर्ण मांग से तात्पर्य मुद्रा की उस मात्रा है जो सामूहिक मांग और सामूहिक मांग एवं सामूहिक पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाती है उस बिन्दु पर प्रभावपूर्ण मांग निर्धारित होती है। सामूहिक मांग एक सामूहिक पूर्ति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :–

सामूहिक मांग :– एक अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में जितनी वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल मांग होती है उसे सामूहिक मांग कहते है। इसमें मुख्य रूप से चार प्रकार की मांग शामिल होती है :–

1. निजी उपभोग की मांग।
2. निजी विनियोग की मांग।
3. सरकार द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग।
4. विशुद्ध निर्यात मांग।

सामूहिक मांग रोजगार के विभिन्न स्तरों पर उत्पादक की प्रत्याशित आय को दर्शाती है अतः स्पष्ट है कि रोजगार के स्तर से इसका सीधा संबंध होता है।

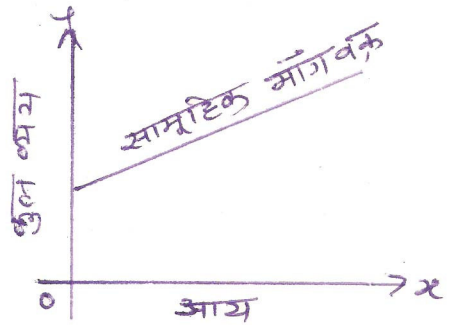

सामूहिक पूर्ति :– एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की कुल मात्रा को सामूहिक पूर्ति कहते है। यह एक निश्चित समय में अर्थव्यवस्था में उत्पादन का कुल मूल्य बताती है। इसे कुल उत्पादन लागत भी कह सकते है,

जो एक उत्पादक को अवश्य प्राप्त होना चाहिए यदि उत्पादक को इससे कम आय प्राप्त होती है तो वह रोजगार के स्तर को बनाये रखने में रूचि नहीं लेते।

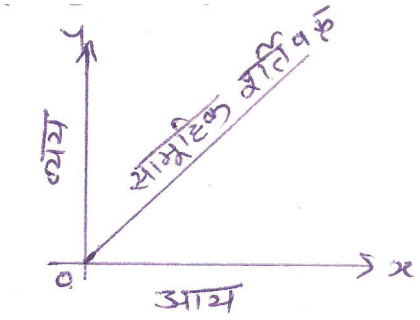

रोजगार के स्तर का निर्धारण :– रोजगार का स्तर उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जिस बिन्दु पर सामूहिक मांग और सामूहिक पूर्ति एक दूसरे को काटते है इसी बिन्दु को कीन्स ने प्रभावपूर्ण मांग कहा है।

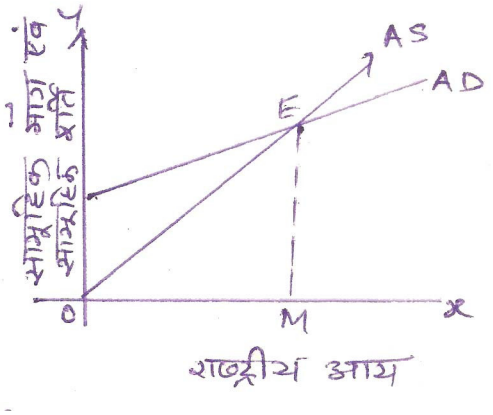

(वर्णन एवं व्याख्या पर 3 अंक, चित्र पर 2 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

आय और रोजगार के परंपरावादी सिद्धांत और कीन्स के सिद्धांत की तुलना :–

क्र.	परंपरावादी सिद्धांत	कीन्स का सिद्धांत
1	यह सिद्धांत पूर्ण रोजगार की मान्यता पर आधारित है।	यह सिद्धांत अपूर्ण रोजगार की मान्यता पर आधारित है।
2	इस सिद्धांत के अनुसार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार एक सामान्य स्थिति है।	इस सिद्धांत के अनुसार पूर्ण रोजगार एक आदर्श स्थिति है।
3	यह सिद्धांत दीर्घकाल में लागू होता है।	यह सिद्धांत अल्पकाल में लागू होता है।
4	इस सिद्धांत के अनुसार बचत और विनियोग में समानता ब्याज दर में परिवर्तन के कारण होती है।	इस सिद्धांत के अनुसार बचत और विनियोग में समानता आय में परिवर्तन के कारण होती है।
5	इसके अनुसार अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन, बेरोजगारी की समस्यायें उत्पन्न नहीं होती है।	इसके अनुसार अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन, बेरोजगारी जैसी समस्यायें उत्पन्न होती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 17. बजट के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. **हिसाब देयता का उद्देश्य :–** एक प्रजातांत्रिक देश में सरकार जनता के प्रति हिसाब देयता के लिये उत्तरदायी है। जनता के प्रतिनिधियों को इस बात को जानने का अधिकार है कि सार्वजनिक धन का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है तथा इससे पूर्व स्वीकृतियों का पालन किया गया या नहीं? बजट के माध्यम से इस उद्देश्य की आपूर्ति संभव हो जाती है।

2. **आर्थिक नियंत्रण** :– बजट के माध्यम से संसद सार्वजनिक कोषों की प्राप्ति और प्रयोग के संबंध में नियंत्रण रखती है तथा इसके लिये उचित नीति का निर्माण करती है। बजट के अभाव में विभिन्न मंत्रालय मनमाने ढंग से कार्य करने लग जायेंगे।
3. **आर्थिक स्थिरता** :– बजट का उद्देश्य आर्थिक स्थिरता बनाये रखना है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता आर्थिक उच्चावचन का पाया जाना है। इन उच्चावचनों को कम करने में बजट की महत्वपूर्ण भूमिका है।
4. **प्रशासकीय कुशलता** :– बजट में प्रत्येक क्षेत्र एवं विभाग की आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर उसके अनुसार व्यय करने की स्वीकृति प्रदान करती है। सार्वजनिक व्यय स्वीकृतियों के अनुसार हो इसका पूरा ध्यान एवं नियंत्रण रखा जाता है।
5. **योजनाओं से संबंधित** :– आर्थिक विकास के संबंध में योजनाओं से संबंधित बजट प्रावधान रखे जाते है। वित्तीय वर्ष में विकास के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रावधान होता है तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु प्रयत्न किये जाते है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

बजट का अर्थ– एक ऐसा विस्तृत आर्थिक विवरण जिसमें सरकार की आय और व्यय का पूरा ब्यौरा होता है, बजट कहलाता है।

परिभाषा :– रिचर्ड गुड के अनुसार– ''सरकार का बजट सरकार की आय तथा व्यय का वित्तीय नियोजन है।''

बजट की विशेषता –

1. **विवरण** :– बजट एक विस्तृत विवरण होता है जिसमें आय और व्यय का पूरा ब्यौरा होता है।
2. **निश्चित अवधि से पूर्व** :– बजट को निश्चित अवधि से पूर्व बनाना आवश्यक होता है।

3. **वित्तीय बातें** :– इसमें केवल वित्तीय बातों का ही विवरण होता है।

(अर्थ व परिभाषा पर 2 अंक, विशेषता पर 3 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 18. सह संबंध के अध्ययन का महत्व :–

1. **चरों के मध्य संबंधों को जानना** :– विभिन्न चरों, घटनाओं, और तथ्यों के बीच संबंधों का ज्ञान सह संबंध के द्वारा किया जाता है।
2. **चर के मूल्य का अनुमान लगाना** :– जब दो चर एक दूसरे से संबंधित होते है तो एक चर के दिये गये मूल्य के आधार पर दूसरे चर के मूल्य का अनुमान लगाया जा सकता है।
3. **व्यवसाय में सहायक** :– इसके द्वारा वस्तु की लागत, बिक्री, कीमत का अनुमान लगाया जाता है।
4. **आर्थिक व्यवहार को समझने में सहायक** :– इसके द्वारा अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाने के लिये प्रभावपूर्ण नीतियां लागू करने में सहायता मिलती है।
5. **अनुसंधान** :– विभिन्न चरों के बीच परस्पर संबंध के अध्ययन से अनुसंधान को बढ़ाने में सह संबंध बहुत महत्वपूर्ण तकनीक है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

कार्ल पिर्यसन का सह संबंध गुणांक –

x चर			**y चर**			
x	समांतर माध्य से विचलन dx(10)	विचलन का वर्ग dx^2	y	dy(9)	dy^2	x व y श्रेणी के विचलनों का गुणनफल (dxdy)
12	+2	4	14	+5	25	10
9	-1	1	8	-1	1	1
8	-2	4	6	-3	9	6

10	0	0	9	0	0	0
11	+1	1	11	+2	4	2
13	+3	9	12	+3	9	9
7	-3	9	3	-6	36	18
$\Sigma x = 70$		$\Sigma dx^2 = 28$	$\Sigma y = 63$		$\Sigma dy^2 = 84$	$\Sigma dxdy = 46$

समांतर माध्य –

$$x = \frac{\Sigma x}{N} = \frac{70}{7} = 10$$

$$y = \frac{\Sigma y}{N} = \frac{63}{7} = 9$$

सह संबंध गुणांक–

$$r = \frac{\Sigma dxdy}{\sqrt{\Sigma dx^2 \times \Sigma dy^2}}$$

$$= \frac{46}{\sqrt{28 \times 84}}$$

$$= \frac{46}{\sqrt{2352}}$$

$$= \frac{46}{48.49}$$

$$r = +0.94$$

निष्कर्ष– स्पष्ट है कि x और y के मध्य धनात्मक सह संबंध है।

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 19. पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित है :–

1. **वस्तु की कीमत** :– पूर्ति पर वस्तु की कीमत का प्रभाव पड़ता है। जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है तो वस्तु की पूर्ति घट जाती है। इसके विपरीत वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उस वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

2. **उत्पादन के साधनों की कीमते** :– पूर्ति पर उत्पत्ति के साधनों की कीमतों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि उत्पादन के साधनों की कीमत बढ़ जाती है तो पूर्ति में कमी आ जाती है। इसके विपरीत उत्पादन के साधनों की कीमते कम हो जाती है तो पूर्ति में वृद्धि हो जाती है।
3. **स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य** :– पूर्ति पर स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्यों का भी प्रभाव पड़ता है। स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने पर वस्तु की पूर्ति घट जाती है तथा स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य घटने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।
4. **प्राकृतिक तत्व** :– पूर्ति पर प्राकृतिक तत्वों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से अनुकूल है, तो पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से प्रतिकूल हो तो पूर्ति घट जायेगी।
5. **तकनीकी ज्ञान** :– तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होने से वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत तकनीकी ज्ञान में कमी होने से वस्तु की पूर्ति घट जाती है।
6. **कर नीति** :– वस्तु की पूर्ति पर सरकार की कर नीति का भी प्रभाव पड़ता है। सरकार द्वारा ऊंची दर से कर लगाने पर पूर्ति घटती है, नीची दर से कर लगाने पर पूर्ति बढ़ती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

पूर्ति की लोच के प्रकार :– जिस दर से वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन होता है उसे पूर्ति की लोच कहते है।

यह निम्न प्रकार की होती है :–

1. **पूर्णतया लोचदार पूर्ति** :– जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने पर भी पूर्ति में परिवर्तन हो तो उसे पूर्णतया लोचदार पूर्ति कहते है। यह एक

काल्पनिक स्थिति है। चित्र से स्पष्ट है कि मूल्य स्थिर रहने पर भी पूर्ति में परिवर्तन हो रहा है।

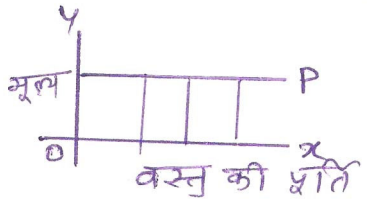

2. **अधिक लोचदार पूर्ति** :– जब वस्तु की कीमत में थोड़ा सा परिवर्तन होने पर पूर्ति में अधिक परिवर्तन हो जाता है इसे अधिक लोचदार पूर्ति कहते है। प्रस्तुत चित्र में कीमत में थोड़ा परिवर्तन हो रहा है लेकिन पूर्ति में अधिक परिवर्तन हो रहा है।

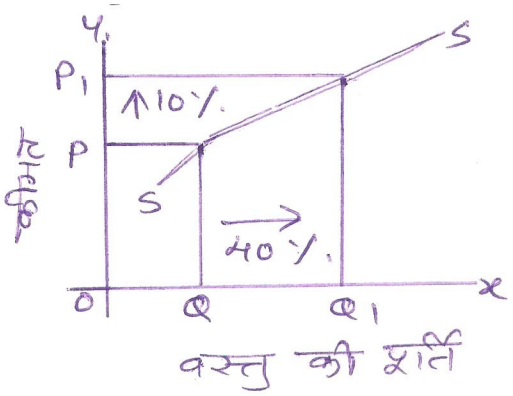

3. **लोचदार पूर्ति** :– जब वस्तु की कीमत और पूर्ति में एक समान अनुपात में परिवर्तन होता है तो उसे लोचदार पूर्ति कहते है। चित्र से स्पष्ट है कि कीमत और पूर्ति में एक समान अनुपात में परिवर्तन हुआ है।

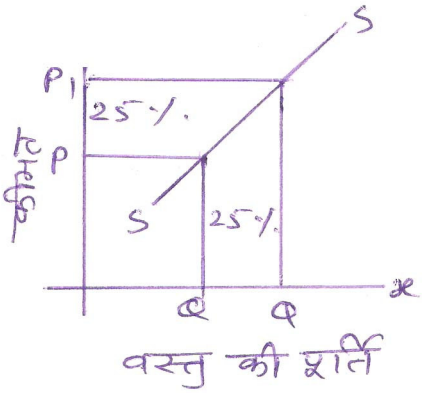

4. **बेलोचदार पूर्ति :–** जब वस्तु की कीमत में अधिक परिवर्तन होने पर पूर्ति में थोड़ा सा परिवर्तन होता है तो उसे बेलोचदार पूर्ति कहते है। प्रस्तुत चित्र से स्पष्ट है कि कीमत में 40 प्रतिशत वृद्धि होने पर पूर्ति में केवल 10 प्रतिशत ही वृद्धि हो रही है।

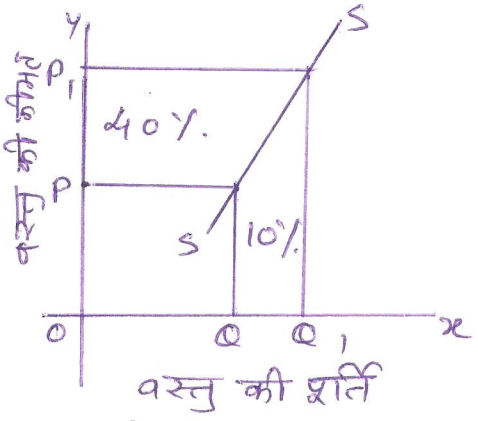

5. **पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति :–** जब वस्तु की कीमत में बार–बार परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता तो उसे पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति कहते है। चित्र में स्पष्ट है कि पूर्ति स्थिर है और मूल्य में परिवर्तन हो रहा है।

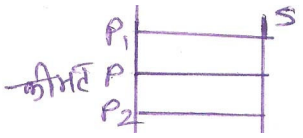

(वर्णन एवं व्याख्या पर 4 अंक, चित्र पर 2 अंक कुल 6 अंक)

उत्तर 20. धातु मुद्रा एवं पत्र मुद्रा में अंतर :–

क्र.	धातु मुद्रा	पत्र मुद्रा
1	यह महंगी धातु की बनी होती है।	यह सस्ती होती है।
2	यह भारी होती है अतः अधिक स्थान घेरती है।	यह हल्की होने के कारण कम स्थान घेरती है।
3	इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना कठिन होता है।	इसे आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जा सकते है।
4	इसका यथार्थ मूल्य होता है।	इसका यथार्थ मूल्य शून्य होता है।
5	यह प्रणाली बेलोचदार है।	यह प्रणाली लोचदार है।
6	यह सरकार द्वारा निर्गमित होती है।	यह देश की केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित होती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

कागजी मुद्रा के प्रमुख दोष :–

1. **मुद्रा प्रसार का भय :–** इसमें मुद्रा प्रसार का भय बना रहता है। संकट के समय सरकार अधिक मात्रा में नोट छापकर मुद्रा संकट तो दूर कर लेती है लेकिन इससे मुद्रा प्रसार की स्थिति बन जाती है।
2. **विदेशी विनिमय दर में अस्थिरता :–** इसके कारण विदेशी विनिमय दर में अस्थिरता आ जाती है जिसका विदेशी व्यापार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
3. **सीमित क्षेत्र** :– इसका चलन एक देश में ही होता है इसे दूसरे देश में स्वीकार नहीं किया जाता। इसलिए इसका क्षेत्र सीमित हो जाता है।

4. **नाशवान प्रकृति :–** यह शीघ्र नाशवान होती है, इसके खराब होने, नष्ट होने, फटने का डर सदैव होता है।
5. **जनता के विश्वास में कमी :–** इस प्रकार की मुद्रा में जनता का विश्वास कम होता है क्योंकि जाली नोट चलन में आने का भय रहता है।
6. **सट्टे को प्रोत्साहन :–** कागजी मुद्रा के अधिक चलन में आने से सट्टा, जुआ आदि प्रवृत्तियों का प्रोत्साहन मिलता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

उत्तर 21. निर्देशांक की प्रमुख विशेषताएं :–

1. **संख्या द्वारा व्यक्त :–** निर्देशांक हमेशा संख्या में व्यक्त किये जाते है।
2. **सापेक्ष माप :–** निर्देशांक सापेक्ष रूप में होते है। यदि परिवर्तन निरपेक्ष हो तो तुलना करना संभव नहीं होता अतः तुलना के लिये इसे सापेक्ष बनाया जाता है। इसके लिये उनके आधार को 100 मानकर प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।
3. **प्रतिशतों का माध्य** :– ये एक विशेष प्रकार के माध्य होते है। इसमें आधार वर्ष के मूल्य को 100 मान लिया जाता है और इस आधार पर अन्य वर्षों के मूल्यों को प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।
4. **तुलना का आधार :–** तुलना समय एवं स्थान के आधार पर की जाती है। समय के आधार पर विशेष वर्ष, माह को आधार माना जाता है और स्थान के आधार पर किसी विशेष स्थान को आधार माना जाता है। सामान्यतः समय को ही आधार माना जाता है।
5. **सार्वभौमिक उपयोगिता** :– इसकी उपयोगिता सार्वभौमिक है। यह आर्थिक, व्यावसायिक समस्याओं की तुलना करने में सहायक होते है।
6. **औसत के रूप में :–** ये परिवर्तन की दिशा को औसत के रूप में व्यक्त करते है। इसमें सामान्य रूप से परिवर्तन की दिशा व मात्रा का मापन होता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

फिशर का आदर्श निर्देशांक –

वस्तुऐं	वर्ष 1985		वर्ष 1986		p_0q_0	p_1q_0	p_0q_1	p_1q_1
	मूल्य P_0	मात्रा q_0	मूल्य p_1	मात्रा q_1				
चावल	4	50	10	40	200	500	160	400
गेहूं	3	10	8	8	30	80	24	64
ज्वार	2	5	4	4	10	20	8	16
योग					Σp_0q_0 = 240	Σp_1q_0 =600	Σp_0q_1 = 192	Σp_1q_1 =480

फिशर का आर्दश निर्देशांक –

P_{01} $$= 100 \times \sqrt{\frac{\Sigma p_1 q_0}{\Sigma p_0 q_0} \times \frac{\Sigma p_1 q_1}{\Sigma p_0 q_1}}$$

$$= 100 \times \sqrt{\frac{600}{240} \times \frac{480}{192}}$$

$$= 100 \times \sqrt{\frac{288000}{46080}}$$

$$= 100 \times \sqrt{6.25}$$

$= \quad 100 \times 2.5$

$P0_1 \quad = \quad 250$

उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर 6 अंक प्राप्त होंगे।

– – – – –